

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

— इस्त खिल्ला ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

प ३६३ (१४३)

ग्रंथ नाम

अभंग.



विषय

मराठी काव्य.



क्रमांक 3 मराठी
५१५/५००३

1 नामसुधा
2 अंगदशिखाई



काव्य

सा विषयावरील अंशंगी
श्लोक वगैरे.

॥ श्री ॥

॥ पद ॥

॥ जावरे सखी मदन मोहन कोरवि
 मजलावरी ॥ जा ॥ श्री ॥ देखेर तन भ
 मदनः बाल ब्रह्म च्यारी ॥ तन मन स
 गब मोह लियो के आत न कुवरी ॥ १ ॥
 ॥ त्रिभुन का त लारो प्राण ले मर स हो
 ॥ टीः सान सखी मील के प्रीत मंगल गा
 वरी ॥ २ ॥ पीत बसन प्राथे कि सन की
 गये दसन प्यारीः जन बरण दूर करे
 ॥ भक्त हीत कारी ॥ ३ ॥ जमुना ले ठनि ट
 गन ट नाट क खेल त गौर धारी ॥ मीर प्र
 ॥ भु चरण कमल होर ही बावरी ॥ ४ ॥
 ॥ जावरे ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ पद ॥

लागर हे गोपाल अरि यामो लागर ॥ श्री
 मेज लजमुना मरि जात ॥ भर लो हो
 जे जाल अरि वर मक ध सु म क प
 पने पुर बाजे न चक न ग ज
 ॥ २ ॥ मीरा क गोर धर ना
 चेरं जोर हो गल ॥ ३ ॥ ५ ॥
 ॥ पद ॥



॥ तार कनो ज गदी श्वर जागुनि ॥ आ
 ॥ न न्य शरण शीघा ॥ हरि ला अ ॥ श्री
 ॥ का सध रा वी स्या से जा ची ॥ दे नार
 ॥ ना ही दगा ॥ १ ॥ उ निया कर दो नो
 ॥ क टा वरि ॥ भक्त सि भेटे उ भा ॥ २ ॥
 ॥ त्रि बक हो उ नि ध्यान तु संधरि ॥ ३ ॥
 ॥ ये का ज नार्द नि गा ॥ ३ ॥ ५ ॥ ५ ॥

॥ पद ॥

॥ हरि बो लो हरि बो लो हरि लो भा ॥ ह
 ॥ रि ना बो ले वा क राम दु हारि ॥ हरि ॥ श्री
 ॥ सो दालि यो तो दे मरी लागे ॥ हरि ने लि
 ॥ ये तो क व री न लागे ॥ १ ॥ धो बी धो के
 ॥ ज ला हो वे ॥ हरि ना मु ली ये तो दि म
 ॥ हो वे ॥ २ ॥ कहत क वि रा सु न मो
 ॥ ३ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

न घटसाहेब चरु ३० ॥ ५२ ॥ अ
 ॥ खलकमोक्षमके ॥ नयनोवीचने
 ॥ जलीचमने ३० ॥ १ ॥ जिवहरपणमेपा
 ॥ नी ॥ अत्रियागरकमई असमानो
 ॥ नारायणकेशरिका ॥ रुपध्यानलग
 ॥ हेनीकाडुसकु ३ ॥ ५० ५० ॥ पद ॥
 ॥ पावहरारि नविं मोमजयेसमई ॥ स
 ॥ कटनारिरेखा ॥ ५० ॥ पागाध
 ॥ कालबसेम ॥ जडुले चर
 ॥ णी ॥ प्राधपत ॥ सासपडालाध
 ॥ रणी ॥ ज्यातिसा ॥ वेदेवाविनवीहर
 ॥ णी ॥ वंदीतसेपदमाथाभवनिसार
 ॥ नी ॥ १ ॥ पारधीहारनळदुष्टबळेया
 ॥ सिवधी ॥ बळेकोमळयाचिपुरले
 ॥ अत्रधी ॥ तुजरिभक्तजनाचा
 ॥ रूपजलधी ॥ २ ॥ आशापाशुचि



Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥ नारु निर्याम ज्ञेयदरी । काळि
 ॥ शल गिळायामु खतोपसरी । ल
 ॥ शीनिष्ट देवामगनाहिउरी । गंग
 ॥ रप्रभु दीना भवपारकुरी । पा
 ॥ ७१५॥ ५५ ॥ पद । कोणवारी
 ॥ कोणवारी वारी प्रालधवाको ॥ ध्या
 ॥ पांडव ही डकी वनी रु दंड डिलेमु
 ॥ नी । आशुनि देजनी जीवम
 ॥ जे देचारिग रु कासिनाग
 ॥ विकेले नारु ड विले ॥ स्मरा
 ॥ नभुमिसिला नारु त्रीपुरारी ॥ व
 ॥ द्यण विनं स बो धी विंद बोली
 ॥ ला शुध ॥ सां डे नि प्राल ध्य माश
 ॥ शुळ मज धारी ॥ प्रा ॥ ७१ ॥ ५५ ॥
 ॥ सजा धन सुत सदन र केशर भास
 ॥ ग ॥ ७१ ॥ जपुं डली न व र सु



Digitized by eGangotri
 The Patilade Sahayhan Menon Dhari and the Yashwantrao Chavan Pratishthan

स्थितिः विशदमुद्रपताभाविता
 वक्रायेस्पृष्टिः नकृति यादितिवाधकः
 दिमाक्षेभजनः करिमनो मकृशाकृपः वी
 तिनोमुणः करि निर्दृष्टपदेतभीमान
 सिनकरितां माक्षीभकीः ननीदीहीतभा
 करणेजे विशयांशलीः तेजापनिची
 कः धानांउतांआहंकर्तृमिबीधुआद
 ये विशयसमंधुः विषयांयाविशयउदो
 आतिआशुधका (जहीविशुय
 मादिकः तसोस विवधकः
 धीयदुनायेक यदेयसांगतु
 शोकः यथसुजे वेकोते तो नृणाः
 संतुदतिप्ररोह यवमनोपककषा
 योगीमविध्यंतिप्रसंगं ॥७॥ टिकाः वे
 रोगाचेंकक्षणः वेणेंधातुपुष्टिंशोण
 ध्यनाआनुपानः नाडिशानहिहैकेन
 साववोखद्वेतां आधीकाआधीक
 तेचिआवेरायेसामुकदितंः साधका
 ताआनिवारः ॥१॥ हृदईनाहिवीशय
 प्रवाठमविनीः येसिजेबा
 निशीतिकु



the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

महसा कर्ककोला ॥६५॥ योका
निर्दिष्टं देहाभीमानः माझे निभू
विण जाणः देहाभीमान तु टेना ॥६६॥ जिणे
देहाभीमानः ते कै से मणसि तु ॥६७॥ अज
मेदभावे भक्ती पुर्णः ते जे देहाभीमान निर्द
॥६८॥ भगवद्भावो सर्वश्रुतिः यानाव आभ
भक्ती हे प्राकृत कियो भजन स्थितिः आतं
ते तरनी ॥६९॥ माझे नामान्या न ते ली मा श्री
ति या ये भवपी मा पा भावे चाचे मनि ॥
॥७०॥ रंणी की ॥७१॥ जो जा गृति
माते जो ॥७२॥ त ये कां ते जो
गळे वै त्रि वे ॥७३॥ नि शी तं नि नि
या पदि गा भ ॥७४॥ तिः वि गु ण वि का
रु तः ते जे आं कां स वि नि वृ तिः वि शये
नि र्दि ष्टे ॥७५॥ भं की सि वि का य से व नः
प्रा धि क्यं न दे जा णः ते वि का यो क दि म द र्प
च क प ग न के सा सि ॥७६॥ ना ना सा ध
त्रा य सा गी तिः सा गी तां पर म दु खि हो तिः
वि का यो भ ग वं ति आ ची तिः ते जे ते हो ति
मु क्त ॥७७॥ या सां गी सिं हं दि स्म र णः ते
॥७८॥ ये ये व मं पु र्ण सा सि बा ध क न
॥७९॥ सा प के म न ते ते



the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

श्री ॥ मङ्गलः सरिनां पतिं च त्र
 कवत् खद्योतनं शारकरं मेरुं
 पश्यति को वत् किल यते क
 ल्प दृमं वा वत् ॥ चितारत्न
 मणी शिला शकवत् पृथ्वी
 पतिं भूत्य वत्सं सारं तृण सा
 रवत् किमपरं देहं निजं भा
 रवत् ॥ १ ॥ द्विजकुले जननं द्वि
 जपूज नं द्विजपूज करे क मल
 पण साधनं ॥ मसा स्थवि



पुराण विचार उद्दिश्ये तपु
 मानसु कृतं कर्म ॥ २ ॥ सुखस्य
 दुःखस्य नकोपि दादा परो ददा
 नीत कुबुद्धि रषा ॥ पुरा कृतं क
 र्म तदेव भुज्यते वारी रहे नि
 स्सरयत् कथा कृतं ॥ ३ ॥ अधिज
 जातं खलु विप्रजन्म रहि
 ताधिक विप्रतामूखताधि
 क्विद्या रामवजिताधिक रा
 मः श्री राम भक्तिं विना ॥ अधि
 क्कृतिः प्रतीमां पनां सुररि
 धा पो स्ववस्मि भूत स्थिता

पिबुधुस्तवरक्षणाय तस्माद्
 वस्यं भजनी लकंठं ॥७॥ हर्म्यं
 यदिकुलवधुस्या गभोगाय
 वित्तं वक्त्रे वाणी सरलमधुरा
 केशवे चित्तव्रितिः ॥ सद्भिः संगे
 वपुश्चिषिद्रता सत्कुलजम्
 पुंसां ॥ धिगु ॥ दुःखत्रिदश
 पदवी स्वर्ग ॥ तेषां ॥ ८ ॥
 वेय्या नर ॥ तैः पशु
 मृगाः प्रयां ॥ तस्यां नटावि
 टगणक गायक मृग्ये मुख
 कान्तानि विविशुः ॥ ९ ॥ इद
 नर्थ यते दिवः पतन् सुकृतेपु
 ण्य जनाय जेधस ॥ १० ॥ रुमेव
 हुदाइ नंकरं रसनांवा महजे
 - २ - । प्रकारिणीः ॥ १२ ॥



एतद्वा रयेकदापीतानामय
 ध्वं मसतोऽनुतविष्णुः यामं
 ॥१७॥ विवर्तिनद्यः स्वयमेवने
 दकं स्वादंतिनः स्वानिफला
 निवृक्षाः। अंभोमिधिर्वर्षति
 नात्तहेतोः परापका रायस
 तांविभूतयः तृणादपि
 लघुतलः पचयाचक
 का। वायुः। ननीतोसौ
 मानं यंयाचरति ॥१९॥
 सोशशोकाश्चगापोश्चवेच
 वाशक्तिपूजकाः ॥ मामेवप्रा
 प्रवंतीहीवेषापः सागरंयं
 ॥२०॥ कालिंदीपलिनोदरेषु
 मुसलीयावदुतः कडितुं तांलकवु
 रिकापयःपिवहरेवद्विष्यतेतेशु



"Joint Project of
 Pannu, Mohan Mandal, Phule and the Kashwantrao
 "Joshi Project of
 Mumbai."

याव जीवं प्रणवमथवावतयेष्ण
 नरुह याजु वेद्यं वसतिमथवाका
 शिपुयां विरुध्युः ॥ यथा लज्जां क
 लि मलतरु घेदका नौरये द्वावि
 षो नामानि शसमानं चं मुक्ति
 रषा चतुर्धा ॥ सलीयां ध्रुव
 लीकृतं त्रिमव ॥ योजन मोहितं
 मत्सेराः फा ॥ तानि ज गुणैरा
 नंदिता स ॥ पूर्णाशा ब्रह
 वः क्रुता वि ॥ पनव याया च
 का ॥ सास्त्रे सप गुणां विंशत्यभ
 वते दीर्घायु रा स्म हे ॥ १२ ॥ या
 यमान जनमान सवत् पूरणाय
 वत जननयस्य ॥ तेन भूमि रति
 भारवतीयं न हुमेर्न गिरिभिर्न स
 मुद्रेः ॥ १३ ॥ यस्य स पृनिवसं



Photo Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule.

(12)

॥ सपकारं च वैद्यं च मंत्रिणं च
 गत्र वादिनम् ॥ स्वामिनं धनिनं च
 गखं मर्मसंज्ञप्रकारायेत ॥
 ॥ चिंतया नाशितं रूपं चिंतया नाशितं
 गवैलं ॥ चिंतया नाशितं धानं व्याधि
 न भवति चिंतया ॥ २ ॥ शौत्रं तैपियं
 गदात्र चं प्रे ॥ धार समुचि
 गतं क्षतग ३ ॥ नत लभ्यते च
 ॥ स्वारं सह ज ॥ ३ ॥ शाने दाने
 गतपस्तीर्थे दि ॥ नरेषु न्यु ॥ विस्म
 मयानहे कर्तव्यो नु ॥ लोवसु धरा
 गजातीयस्य गृहे नास्ती भा ॥ थो व
 गप्रियवादिनि ॥ अरं ण्यं ते न गत
 गव्यं यथा रण्यं तथा गृहे ॥
 ॥ ५ ॥ तम ॥



Digitized by eGangotri, Dhule and the Kashwantra Charan Patil Trust, Mumbai.

तिसदिजावेदशास्त्रानपुणा
 बुधया ॥ तत्र ~~कु~~ त गुरु हंस
 कलवीथभाजनं मारमारम
 णमारमाश्रयं ॥१४॥ विप्रदि
 षड् गुणयुतादरविंदनाभपा
 दारविंदविमुखा स्वपचंवरि
 वं ॥ मनेत ~~त~~ ननोवचने
 हिताथप्रा ~~त~~ सकुलन
 तुभरिमान ~~ध~~ मोसत्यं
 दमतपअ ~~ध~~ मंहंसता ॥
 तितिक्षाअनुसुयान्च यक्षोदानं
 धृतिश्रुतांघ जिह्वानवति
 भगवत्सुदुषणामधेयंचतः
 श्रुतेनस्मरतितश्चरणारवि
 दं ॥ १५ ॥ जायनावमतीसदि



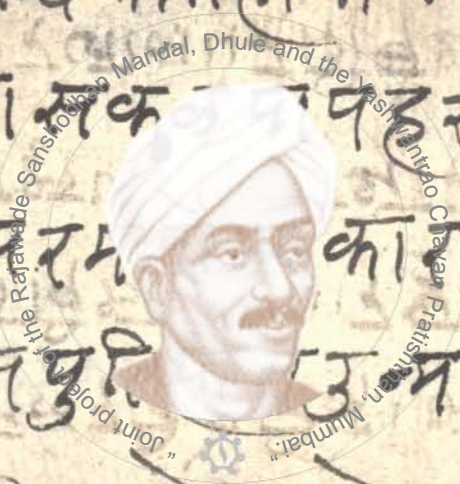
वा ॥ इत्येवाकृत्या प्रकृत्या ॥ १२० ॥
 धिया भ्रुवा यशो दा व च आ
 यादः ॥ १२१ ॥ स्वां स्वां करे पाव
 म् ॥ १२२ ॥ इत्येव हस्ति ॥ १२३ ॥ इ
 तादरी दी क्रुपणा धना द्यो पापी चि
 रायुः सुकृतिः गतायुः ॥ अकुले
 नरा ज्येसक ले से वा डी प्रकारे ॥
 लिनते मा ॥ १२४ ॥ व च र स्थ सु
 त स्य सुतः ॥ १२५ ॥ इत्येव शी जे न
 नी न पि ता र ॥ १२६ ॥ इत्येव र स्थ सु
 सुते छि न ह ॥ १२७ ॥ च र स्थ सु व च शी इ
 क्षि रा दी त ल क ॥ १२८ ॥ इत्येव र ॥ १२९ ॥
 य इ भा वि न त इ नो य इ वा की न त न्य
 था ॥ इति चिंता विषयो यं बो धो
 भ्रमत्रिवर्तकः ॥ १३० ॥ प स क के षु
 च या वि द्या पर ह स्ते पुं य इ न ॥
 उपनेष न कार्ये षु न स्या वि द्या
 न त इ न ॥ १३१ ॥ (१५)



॥ नासि ॥ नामसादनसदानय
 ॥ नासि ॥ १ ॥ जसासाजिराचंद्रमापुर्ण
 ॥ मेचा ॥ न ठसाबिबलातेविसाच्यामुखा
 ॥ चा ॥ कळादेखुनिशुललिकामिनिगे ॥
 ॥ द्यनशासगोपाळब्रहावनिगे ॥ १ ॥
 ॥ दशरथाप्रनिजानिकौषिके ॥ वचप
 ॥ नमागिनलप ॥ जजसुत
 ॥ रविकौशविभु ॥ रघुविराप्रति
 ॥ मजरक्षणा ॥ रथासठवेगि
 ॥ लिघेस्यारजाले ॥ नशिचेथवेचाले
 ॥ निभोवनाले ॥ पुठेचालनिदुंडुमि ॥
 ॥ व्याणिभेरि ॥ आनेकेवुरेआणीना
 ॥ नानफेरि ॥ १ ॥ चौअंजनिचाहय
 ॥ दिदजाले ॥ नोरावणाचेस
 ॥ नेले



॥ नलसि तेलामुलि कुडाप
 ला ॥ १ ॥ द्वारकेसिउपमाकवणा
 ॥ चिन्मुन्मसाम्परिवैश्ववणाचि
 ॥ भुक्तिमुक्तिफलदायकलंका ॥ या
 ॥ गुणजाधिकसाप्तकलंका ॥ १ ॥
 ॥ द्वारकासककपहरका ॥ १ ॥
 ॥ खिलिपरमकाका ॥ १ ॥
 ॥ समोक्षपुरिउमता ॥ १ ॥
 ॥ हाकविस्रणेतथोधुंता ॥ १ ॥



(१७)

वेणी. शाहुहुसेन.
 दास- रामदास.
 नयननय-
 १७

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

(18)

॥ चो गे आठ वी नः वीट वरी उताः
 ॥ नामा गेरु म्मा इ दी से दी व्य मे नाः
 ॥ पु उ ली का ले दी पर ब्रह्म आ ल काः
 ॥ च र ठी वा हे ती मा उ घ री ज गाः ॥
 ॥ ध्या ल ये दे वे जै ये प ड र गा र रु
 ॥ मा इ व ल ना पा वे जी व ल डा ॥ १ ॥
 ॥ गु ल री मा वा ग काः कर टे
 ॥ उ क टीः को री गा व र क रु
 ॥ ल व्हा दीः ती सु र व र
 ॥ ली स ये री ग र उ ह उ
 ॥ म त रु व टे री ज ये द
 ॥ ज ल ये दे वः का ज्वा सा डी का
 ॥ र ही की न क ज न ये चीः सा
 ॥ अ उ ल ये चीः च द्द ना गा ती
 ॥ ची ख लो ले का र चीः द रु ना
 ॥ ल हे ल मा ने त या हो ये मु की
 ॥ के र वा सी णा म दे व ना वे
 ॥ वो बा ल चीः जै ये दे व ल ये दे
 ॥ व ॥ ३ ॥



the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com